विचार बिन्दु

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। –हरिवंश राय बच्चन

मजबूत सरकार या मज़बूर सरकार?

4 जून 2024 को लोकसभा चुनाव के परिणाम घोषित हो गए। सभी एग्जिट पोल के अनुमानों को गलत साबित करते हुए मतदाता ने अपनी परिपक्वता का प्रदर्शन किया एवं किसी भी एक दल को बहुमत के लिए आवश्यक 272 सीटों तक नहीं पहुंचाया। गत दो लोकसभा चुनावों 2014 और 2019 में भाजपा को अकेले क्रमश: 282 और 303 सीटें प्राप्त हुई थीं।

कहने को तो ये दोनों सरकारें, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन या एन डी ए की थीं, किंतु भाजपा द्वारा बहुमत से कहीं अधिक सीटें जीतने के कारण, वास्तविकता में 10 वर्षों में कभी ऐसा नहीं लगा कि सरकार, भारतीय जनता पार्टी की नहीं अपितु एन डी ए की थीं। कभी–कभी तो ऐसा भी लगा जैसे सरकार न एनडीए की है ना बीजेपी की, अपितु सरकार तो केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की है। शायद यही कारण है कि सरकार को 'मोदी सरकार' के रूप में ही संबोधित किया जाता रहा। किसी भी मंत्रालय का कोई काम या निर्णय रहा हो, सब पर छाप केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की थी। हर समय और हर स्थान पर प्रधानमंत्री मोदी ही दिखाई देते थे, चाहे अवसर अंतरिक्ष यान के प्रक्षेपण का हो, नौसेना के किसी जहाज के लोकार्पण का हो, असम में किसी बहुत बड़े पुल के लोकार्पण का हो, प्रगति मैदान में 'भारत मंडपम' के उद्घाटन का हो, वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर प्रारंभ करने का हो। न केवल यह, देश में कोरोना के 100 करोड़ टीके लगने के अवसर पर भी देश में इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के प्रत्येक माध्यम और पेट्रोल पंपों के होर्डिंग तक पर केवल और केवल नरेंद्र मोदी ही छाए हुए थे। यहां तक कि कोरोना वैक्सीन के प्रमाण पत्र पर भी प्रधानमंत्री मोदी का ही चित्र अंकित था। उज्जवला गैस के वितरण के लिए धन्यवाद के लिए पेट्रोल पंपों पर लगाए गए होर्डिंग पर केवल प्रधानमंत्री मोदी का ही फोटो अंकित होता रहा।

स्पष्ट है, सरकार पर एकाधिकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ही था। शायद इसी कारण पार्टी के कार्यकर्ताओं एवं यहां तक कि राष्ट्रीय मीडिया द्वारा भी सरकार की प्रत्येक उपलब्धि के लिए व्यक्तिगत रूप से श्रेय प्रधानमंत्री को ही दिया गया। लोगों को यह तक पता नहीं था कि किस विभाग का मंत्री कौन है? काम चाहे किसी भी विभाग ने किया हो, उसकी उपलब्धि का श्रेय स्वयं नरेंद्र मोदी जी ने ही लिया।

प्रधानमंत्री ने अपने भाषणों में बार–बार यह कहा कि उनकी सरकार एक 'मजबूत' सरकार है जबकि पहले कई वर्षों तक जो भी सरकार रही वे 'मजबूर' सरकार थीं। उनका संकेत विशेष रूप से मनमोहन सिंह के कार्यकाल की ओर था। उनका यह कहना सही भी था क्योंकि किसी भी एक दल को बहुमत से अधिक सीटें 1984 के बाद पहली बार प्राप्त हुई थीं। इस संदर्भ में 2024 के लोकसभा चुनाव के परिणाम का विश्लेषण उपयुक्त होगा।

इस चुनाव में आम मतदाता ने यह सिद्ध कर दिया कि किसी भी एक व्यक्ति के हाथों में सत्ता का केंद्रीकरण रोकने में वह सक्षम है। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को बहुमत यानी 272 से बहुत कम अर्थात 240 सीटें प्राप्त हुईं। एनडीए गठबंधन को कुल मिलाकर 293 सीटें मिलीं।

अब तक एनडीए की सरकार होते हुए भी भाजपा के सहयोगी दलों की भागीदारी मंत्रिमंडल में नाम मात्र की ही थी। जो भी मंत्रालय उन्हें दिए गए, उन्हें स्वीकार करने के अतिरिक्त उनके पास कोई विकल्प नहीं था। सहयोगी दलों को उपयुक्त सम्मान न मिलने का ही कारण रहा कि भाजपा के सहयोगी दल एक–एक कर उनसे अलग होते चले गए जैसे– शिवसेना, अकाली दल। यह ज्ञात नहीं है कि गत 10 सालों में एनडीए की बैठक कब हुई एवं कौन इसका संयोजक था? सरकार तकनीकी रूप से एनडीए की थी, किंतु सहयोगी दलों को लगभग महत्वहीन बना दिया गया था। देश 'एक दल– एक नेता' की दिशा में बढ़ रहा था। 2024 के चुनाव परिणाम ने इस स्थिति को एकदम बदलकर रख दिया है।

चुनाव प्रचार के दौरान भी सभी प्रचार सामग्री में केवल प्रधानमंत्री के ही चित्र का उपयोग किया था। यहां तक कि भाजपा के घोषणा पत्र को भी 'मोदी की गारंटी' के नाम से प्रचारित–प्रसारित किया गया। सभी सार्वजनिक सभाओं में एवं विभिन्न साक्षात्कारों में प्रधानमंत्री ने हर बार 'मोदी की गारंटी' का उल्लेख किया एवं एक प्रकार से उन्होंने व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदारी ली कि वह भारत को विकसित राष्ट्र बनाएंगे। 2024 के लोकसभा चुनाव में भारत के आम मतदाता ने अपनी ताकत का परिचय दिया और उसके द्वारा दिए गए जनादेश से यह स्पष्ट हुआ कि किसी एक दल का बहुमत नहीं होगा एवं बिना अन्य दलों के सहयोग के कोई भी सरकार नहीं बना पाएगा। इसी कारण, प्रधानमंत्री मोदी अब अपनी सरकार को 'मोदी सरकार' के बजाय एनडीए सरकार कहने पर मजबूर हैं।

राष्ट्रपति जी द्वारा 9 जून, 2024 को प्रधानमंत्री एवं 71 मंत्रियों को पद की शपथ दिला दी गई है। इनमें 30 केबिनेट मंत्री, 6 राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 35 राज्यमंत्री हैं। नई सरकार का गठन हो गया है और तीसरी बार प्रधानमंत्री के पद पर नरेंद्र मोदी पदासीन हो गए हैं। अब देशवासियों को यह जानने की उत्सुकता होगी कि नई सरकार मजबूत सरकार के रूप में चलाई जाएगी अथवा मजबूर सरकार बनकर रह जाएगी। उल्लेखनीय है कि 10 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी इच्छा अनुसार निर्णय लिए। कई बार तो उनके मंत्रिमंडल के सहयोगियों तक को निर्णय की भनक नहीं लगी, जैसे नोटबंदी का निर्णय हो अथवा कोरोना के कारण पूरे देश में अचानक लॉकडाउन घोषित करने का निर्णय हो। इन निर्णयों से देश के नागरिकों को चाहे कितनी भी कठिनाई और परेशानियों का सामना करना पड़ा हो, किंतु सरकार को कोई फर्क़ नहीं पड़ा और न ही इसके लिए किसी को जिम्मेदार ही ठहराया गया। भारी बहुमत के कारण और 10 सालों तक बिना विरोध के सरकार चलाने के कारण, नरेंद्र मोदी अति आत्मविश्वास से भर गए और उन्होंने लोकसभा में अपने भाषण के दौरान ही यह 'अबकी बार 400 पार' का नारा दे दिया। यह भी कहा गया कि भाजपा स्वयं 370 सीटें जीतेगी। लोकसभा चुनाव परिणाम के आते ही यह स्वप्न टूट गया और भारतीय जनता पार्टी केवल 240 सीटों पर सिमट कर रह गई। यह विचित्र है कि भाजपा 240 सीटें प्राप्त करके उत्सव बना रही है और इंडिया गठबंधन भी 234 सीटें प्राप्त करके खुशी का अनुभव कर रहा है।

> **इस चुनाव में आम मतदाता ने यह सिद्ध कर दिया कि किसी भी एक व्यक्ति के हाथों में सत्ता का केंद्रीकरण रोकने में वह सक्षम है। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को बहुमत यानी 272 से बहुत कम अर्थात 240 सीटें प्राप्त हुई। एनडीए गठबंधन को कुल मिलाकर 293 सीटें मिलीं।**

यह विडंबना ही है कि भारतीय जनता पार्टी को सरकार बनाने के लिए उन दलों का सहयोग लेना पड़ रहा है जिनकी विचारधारा कुछ महत्वपूर्ण मामलों में भाजपा से बिल्कुल अलग है। उदाहरण के लिए, प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा की कि मुसलमानों को किसी प्रकार का आरक्षण कतई नहीं दिया जाएगा जबकि तेलुगू देशम पार्टी ने यह घोषणा कर दी है कि आंध्र प्रदेश में मुसलामानों को चार प्रतिशत आरक्षण यथावत जारी रहेगा।ऐसी सूरत में प्रधानमंत्री मोदी का क्या रुख रहेगा इस पर सब की नजर रहेगी। इसी प्रकार नीतीश कुमार पूरे देश में जातिगत जनगणना की मांग करते रहे हैं जबकि भारतीय जनता पार्टी इसके विरुद्ध रही है। यही बात यूनिफॉर्म सिविल कोड और एन आर सी पर भी लागू होगी। तेलुगु देशम पार्टी और जनता दल (यू) किसी भी सूरत में ऐसा कोई भी निर्णय लेने में सहमत नहीं होंगे जो अल्पसंख्यक समुदाय के विरुद्ध हो। क्या सरकार अपनी घोषणाओं को भुला देगी?

इन चुनाव परिणामों ने सिद्ध कर दिया है कि अब भारत में चुनाव, केवल धर्म के आधार पर ध्रुवीकरण करके नहीं जीता जा सकता है। भाजपा ने यही गलती की और वे यह मान कर चले कि धर्म के आधार पर विभाजन करके वे बड़ा बहुमत प्राप्त कर लेंगे। शायद इसीलिए, मोदी ने भी अपने चुनाव प्रचार में धार्मिक ध्रुवीकरण पर ही बल दिया। आश्चर्य है कि फैजाबाद लोकसभा की सीट, जिसके अंतर्गत अयोध्या भी स्थित है, जहां पर राम मंदिर निर्माण का भव्य आयोजन किया गया और जहां पर लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या हिंदुओं की है, वहां भी भारतीय जनता पार्टी का उम्मीदवार हार गया। संदेश स्पष्ट है कि अब जनता को आप धर्म के आधार पर बांट कर विजय प्राप्त नहीं कर सकते।

प्रधानमंत्री मोदी को अपने काम करने के तरीके में बदलाव लाना होगा और सबके साथ मिलजुल कर काम करने की भावना विकसित करनी होगी। यह संदेश भी साफ दिया है कि यदि कोई दल अथवा नेता तानाशाही प्रवृत्ति की ओर बढ़ेगा तो जनता उसे नकार देगी। यह देश के हित में भी है।

मजबूत सरकार का एक लाभ यह होता है कि वह कोई भी निर्णय बिना किसी विलंब के ले सकती है। अब तक प्रधानमंत्री ने अधिकांश निर्णय अपने ही स्तर पर लिए। अब न केवल भाजपा के सांसदों के साथ संवाद की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलेगा अपितु सहयोगी दलों से विचार–विमर्श की प्रक्रिया अधिक अपनाई जाएगी। देखना यह है कि वे अपनी मूल प्रवृत्ति से समझौता करते हुए अन्य दलों के साथ मिलकर कैसे सरकार चलाएंगे? उल्लेखनीय है कि उन्होंने गुजरात का मुख्यमंत्री रहते हुए भी सदैव भारी बहुमत वाली सरकार का 13 वर्ष तक नेतृत्व किया था। अब प्रधानमंत्री को विभिन्न उपलब्धियों का श्रेय सहयोगी दलों के प्रतिनिधियों को भी देना होगा। अब तक ऐसा देखा गया था कि प्रधानमंत्री जी को किसी भी चित्र में स्वयं के अलावा और किसी का भी सम्मिलित होना कतई पसंद नहीं था। गठबंधन के दलों के नेताओं को वे कैसे सम्मान देंगे, इसकी बानगी एनडीए का नेता चुनने वाली बैठक में देखी गई थी। सहयोगी दलों के नेताओं को यह सम्मान, अस्थाई था या वास्तव में उनकी सोच में फर्क पड़ा है, यह तो आने वाला समय ही बताएगा।

एक और बात जो महत्वपूर्ण है, वह यह कि, अब तक मीडिया को भी सरकार के निर्णय लेने की प्रक्रिया के बारे में भनक नहीं लगती थी। अब, चूंकि कई सहयोगी दलों के प्रतिनिधि भी मंत्रिमंडल में शामिल होंगे एवं वे अनौपचारिक रूप से मीडिया के साथ संवाद करना प्रारंभ करेंगे, तो कई ऐसी बातें छनकर मीडिया तक आएंगी जो पिछले 10 वर्षों में नहीं आ पाती थीं। एक तरह से अच्छा ही है क्योंकि इससे सरकार के निर्णय में अधिक सामूहिकता आएगी और अधिक पारदर्शिता भी होगी।

गत वर्षों में गठबंधन सरकारों का अनुभव तो यही है कि कई महत्वपूर्ण निर्णय लंबे समय तक नहीं हो पाए जिसके कारण भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा मिला और विकास की गतिविधि अवरुद्ध हुई। इस स्थिति को policy paralysis" का नाम दिया गया था।

आशा की जानी चाहिए कि प्रधानमंत्री मोदी, अपने तीसरे कार्यकाल में गठबंधन के दलों के साथ सर्व सहमत विषयों, पर देश और देशवासियों के हित में, त्वरित गति से निर्णय लेंगे। संभव है, कुछ विवादास्पद विषयों पर कार्यवाही कुछ समय के लिए स्थगित करनी पड़े। सरकार को आने वाले दिनों में कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेना होगा जैसे किसानों से संबंधित प्रकरण, अग्नि वीर योजना की समीक्षा। लोकसभा क्षेत्रों के पुन: सीमांकन हेतु इस प्रकार का फार्मूला बनाना होगा कि दक्षिणी राज्यों के प्रतिनिधित्व पर विपरीत प्रभाव न पड़े। उल्लेखनीय है कि महिलाओं के लिए लोकसभा और विधानसभाओं में आरक्षण भी पुनर्सीमांकन के बाद ही लागू हो पाएगा।

यह तो भविष्य ही बताएगा कि गठबंधन सरकार की मजबूरी के बावजूद प्रधानमंत्री कितनी मजबूती के साथ देशवासियों को तीव्र गति से विकास के पथ पर आगे बढ़ा पाएंगे। वे ऐसा कर पाएँ, उसके लिए अनेकानेक शुभकामनाएं!

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

श्रुत पंचमी षट्खण्डागम - एक आगम ग्रंथ का उद्भव दिवस

तीर्थंकर महावीर की वाणी लिपिबद्ध कर जन–जन तक पहुंचाने का महान दिन

भागचंद जैन मित्रपुरा

आज से 1867 वर्ष पूर्व जेष्ठ शुक्ला पंचमी के दिन भगवान महावीर के उपदेशों को श्रवण के आधार पर षट्खण्डागम ग्रंथ के रूप में लिपिबद्ध कर के वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित किया था। अत: आज के दिन को श्रुत पंचमी के नाम से जाना जाता है। यह दिवस जैन धर्मावलंबियों के लिए जन जन तक धर्म ज्ञान पंहुचाने का एक प्रयोजनीय दिन है। तीर्थंकरों के द्वारा केवलज्ञान प्राप्ति उपरांत, कुबेर द्वारा रचित समवशरण में विराजित देव, मनुष्य एवं तिर्यंच गति के जीवों को प्रतिदिन पूर्वान्ह, मध्यान्ह, अपरान्ह एवं अर्धरात्रि में चार बार छह–छह घड़ी पर्यंत दिव्य ध्वनि, जिसमे सात सौ लघु भाषा और अठारह महा भाषा प्रस्फुटित होती है, के द्वारा उपदेश दिया जाता है। सभी जीव अपनी अपनी भाषा में दिव्य ध्वनि को समझ लेते है। भगवान महावीर की वाणी श्रुत रूप में रही, जो प्रथम गणधर इंद्रभूति गौतम शुरु होकर अंतिम केवली जम्बू स्वामी एवं अंतिम श्रुत केवली भद्रबाहू तक निरंतर प्रवाहमान होती रही। तत्पश्चात वर्षों तक उनके उपदेश आचार्यों, मुनियों के द्वारा अंगों एवं पूर्व के ज्ञान के आधार पर श्रुत रूप में ही जनमानस में प्रचलित रहे। उस समय लिखित में कोई ग्रंथ नहीं था।

इस प्रकार 62 वर्ष मे तीन केवली, 100 वर्ष में पाँच श्रुतकेवली, 183 वर्ष में 11मुनि 11अंग 10 पूर्व के धारी, 220 वर्ष में पाँच मुनि 11अंग के धारी, 118 वर्ष मे चार मुनि एक अंग के धारी हुए इस प्रकार भगवान महावीर के पश्चात 683 वर्ष तक अंगो का ज्ञान रहा और श्रुतरूप में निरंतर जारी रहा। दीप से दीप जलाने की परंपरा चलती रही।

अंगों और पूर्व के शेष ज्ञान के लुप्त होने का आभास

एक अंगधारी आचार्य धरसेन जी विहार करते हुए सुराष्ट्र देश के गिरिनार के समीप उर्जयन्तगिरि की चन्द्रगुफा में पहुंचे। जब इन्हें अपने निर्मल ज्ञान से यह आभास हुआ कि उनकी आयु थोड़ी ही शेष रह गई है और चिंता हुई कि अवसर्पिणी काल के प्रभाव से श्रुतज्ञान का दिन प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है। अंगों और पूर्व के शेष ज्ञान के भी लुप्त होने एवम कालांतर में शास्त्रों के घटते ज्ञान से चिंतित होकर कि महावीर की श्रुत परंपरा, बुद्धि के निरंतर ह्रास के कारण केवल सुनकर सीखने के आधार पर नहीं चल सकती। इस समय उनको जो कुछ श्रुत प्राप्त है, उतना भी आज किसी को नहीं है, यदि वे अपना श्रुत दूसरे को नहीं दे सके तो यह भी उनके ही साथ समाप्त हो जायेगा। ऐसा विचार कर धरसेनाचार्य जी ने देशेन्द्र नामक देश में वेणातटाकपुर में निवास करने वाले महामहिमाशाली मुनियों के निकट ब्रह्मचारी के द्वारा पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने अपनी अल्प आयु शेष रहने के बार में लिखा, साथ ही आग्रह किया कि हमारे श्रुतज्ञानरूप शास्त्र का व्युच्छेद उनके साथ ही समाप्त न हो जावे, उसके रक्षार्थ तीक्ष्ण बुद्धि वाले श्रुत को ग्रहण और धारण करने में समर्थ दो यतीश्वरों को भेजने का आग्रह किया।

आचार्य धरसेन को स्वप्न में दो श्वेत वृषभ द्वारा वंदना :–मुनि संघ ने आचार्य धरसेन के श्रुतरक्षा सम्बंधी अभिप्राय को जानकर दो मुनियों को गिरिनगर भेजा। दोनों मुनि सुबुद्धि (पुष्पदंत), नरवाहन (भूतबलि) विद्याग्रहण करने में तथा उसका स्मरण रखने में समर्थ थे, अत्यंत विनयी तथा शीलवान थे। उनके देश, कुल और जाति शुद्ध थे और वे समस्त कलाओं में पारंगत थे। जब वे दो मुनि गिरिनगर की ओर जा रहे थे तब श्री धरसेनाचार्य ने ऐसा शुभ स्वप्न देखा कि दो श्वेत वृषभ आकर उन्हें विनयपूर्वक वंदना कर रहे हैं। उस स्पप्न से उन्होंने जान लिया कि आने वाले दोनों मुनि विनयवान एवं धर्मधुरा को वहन करने में समर्थ है। उनके मुंह से आशीर्वादात्मक वचन 'जयउसुयदेवदा (श्रुत देवता की जय हो)' निकला और नींद से उठकर खडे हो गए। उसी समय उन्होंने देखा कि दो मुनिवर आ पहुंचे और विनयपूर्वक उन्होंने आचार्य के चरणों में वंदना की। आचार्य श्री ने उन्हे यात्रा थकान शमन के लिए तीन दिन तक विश्राम करने को कहा।

तत्पश्चात श्री धरसेनाचार्य ने उनकी परीक्षा की। एक को अधिक अक्षरों वाला और दूसरे को हीन अक्षरों वाला विद्यामंत्र देकर दो उपवास सहित उसे साधने को कहा। ये दोनों गुरू के द्वारा दी गई विद्या को लेकर और उनकी आज्ञा से सिद्धभूमि गिरनार पर्वत पर जाकर नियमपूर्वक अपनी अपनी विद्या की साधना करने लगे। विद्या सिद्ध होने पर उनके सामने दो देवियां प्रकट हो गई। उनमें से एक देवी के एक ही आंख थी और दूसरी देवी के दांत बड़े–बड़े थे। मुनियों ने जब ऐसा देखा तो सोचा कि देवों का यह स्वभाव नहीं है यह असली स्वरुप नहीं है। अवश्य ही उनकी साधना में कोई भूल हुई।

तब व्याकरण की दृष्टि से उन्होंने मंत्र पर विचार किया। जिसके सामने एक आंख वाली देवी आई थी उन्होंने अपने मंत्र में एक वर्ण कम पाया तथा जिसके सामने लम्बे दांतों वाली देवी आई थी उन्होंने अपने मंत्र में एक वर्ण अधिक पाया। दोनों ने अपने–अपने मंत्रों को शुद्ध कर पुन: अनुष्ठान किया, जिसके फलस्वरूप देवियां अपने यथार्थ स्वरूप में प्रकट हुई और कार्य करने हेतु आदेश देने के लिए कहा। दोनों मुनियों ने कहा कि उनका कोई भी पारलौकिक कार्य नहीं है, उन्होंने केवल गुरू की आज्ञा से ही विद्यामंत्र की आराधना की है। ये सुनकर वे देवियां अपने स्थान को चली गई।

आचार्य धरसेन द्वारा अध्ययन प्रारंभ एवं नया नामकरण

दोनों मुनियों ने गुरुदेव के समीप जाकर अपना सारा वृतान्त निवेदन किया, मुनियों की इसी कुशलता से गुरू ने जान लिया कि सिद्धांत का अध्ययन करने के लिए वे योग्य पात्र है। दोनों मुनियों का अध्ययन अषाढ शुक्ल एकादशी के दिन पूर्ण हुआ, धरसेनाचार्य जी ने दोनों को आचार्य पद प्रदान किया। इसी दिन देवों ने भी दोनों मुनियों की पूजा की। एक मुनिराज के दांतों की विषमता दूर कर देवों ने उनके दांत को कुंदपुष्प के समान सुंदर करके उनका 'पुष्पदन्त' नामकरण किया तथा दूसरे मुनिराज को भी भूत जाति के देवों ने तूर्यनाद जयघोष, गंधमाला, धूप आदि से पूजा कर 'भूतबलि' नाम से घोषित किया।

अनन्तर श्री धरसेनाचार्य ने विचार किया कि उनकी मृत्यु का समय निकट है। इन दोनों को संक्लेश न हो, यह सोचकर वचनों द्वारा योग्य उपदेश देकर दूसरे ही दिन विहार कराया। नौ दिन बाद कुरीश्वर नगर में पहुंचे और श्रावण् कृष्ण पंचमी को दोनों मुनिराजों ने वहीं साथ में चातुर्मास किया। चातुर्मास के बाद यहा से पुष्पदन्त मुनि वनवास देश को चले गए वहां पर जिनपालित श्रावक को जिन दीक्षा दी और भूतबलि मुनि मदुरई देश मे पहुंचकर ठहर गए।

पुष्पदन्त मुनिराज जिनपालित को पढाने के लिए और महाकर्मप्रकृति प्राभृत का छह खण्डों में उपसंहार करना चाहते थे अत: उन्होंने लिखना प्राराम्भ किया और जीवस्थानाधिकार नामक पहले खंड के आठ अनुयोग (अधिकार) द्वार मे से पहले सतप्ररुपणा अधिकार के 177 सूत्रो की रचना की और शिष्य मुनि जिनपालित को आचार्य भूतबलि मुनि के पास अभिप्राय जानने के लिए भेजा कि वे इस कार्य के करने मे सहमत है अथवा नही। इस रचना को देखकर भूतबलि मुनि बहुत खुश हुए और षटखंडरुपआगम रचना का अभिप्राय जान लिया। स्वयं ने पाँच खण्डों में पूर्व सूत्रो सहित 6000 श्लोक प्रमाण 'द्रव्यप्ररूपणादि' अधिकारो की रचना की। इसके पश्चात महाबंध नामक छठे खण्ड में 40000 श्लोक प्रमाण लिखा।

आचार्य भूतबलि ने इस प्रकार षटखण्डागम की रचना करके उन सूत्रों को पुस्तक बद्ध किया और ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन चतुर्विध संघ सहित कृतिकर्म पूर्वक महापूजा की। इसी पंचमी का नाम 'श्रुतपंचमी' नाम प्रसिद्ध हो गया तथा आकाश से देवो ने भी अनगिनत बार पुष्पो की वृष्टि की एवं तभी से लेकर लोग श्रुतपंचमी के दिन श्रुत की पूजा करते आ रहे हैं। भूतबलि जी मुनिराज ने जिनपालित को षट्खण्डागम ग्रन्थ देकर पुष्पदन्त मुनि के पास भेजा। उन्होंने अपने गुरु के चिन्तित कार्य को पूरा हुआ देखकर महान हर्ष किया और श्रुत के अनुराग से चतुर्विध संघ के मध्य महापूजा की। इस प्रकार 'षट्खण्डागम' नामक ग्रंथ की रचना हुई। षट्खण्डागम दिगम्बर साधु आचार्य धरसेन के द्वारा दिए गए आगम के मौखिक उपदेशों पर आधारित है।

षट्खण्डागम (छः भागों वाला धर्मग्रंथ) दिगम्बर जैन संप्रदाय का सर्वोच्च और सबसे प्राचीन पवित्र जिनवाणी धर्मग्रंथ है।

जिनवाणी को आत्मसात करना

हम पूजा पाठ को धर्म की मात्र क्रिया समझ कर पंच परमेष्ठि का गुण गान करते हैं। जिनवाणी हमें ज्ञान देती है कि ज्ञान पूर्वक क्रिया ही फल प्रदायनी होती है। अत: पूजापाठ में समाहित अध्यात्म रुपी तत्व का शोधन करेंगे, तभी हम सच्चे अर्थों में जिनवाणी को आत्मसात कर सकते हैं। जैन धर्म में देव, शास्त्र एवं गुरु की पूजा का विशेष महत्व है। जैन धर्मावलंबी सेद्धांतिक देशना से लिपिबद्ध जिनवाणी की पूजा, आराधना करके शास्त्र भंडारों का उचित रखरखाव, देखभाल, सुरक्षा, आत्म कल्याण के उद्देश्य से स्वाध्याय करने का नियम लेकर शास्त्रों का धर्मरक्षार्थ सदुपयोग किया जा सकता है। पूर्व में भी हमारे असंख्यात् धर्म ग्रंथो को विधर्मियो द्वारा अपने कब्जे में लिए गए हैं। अत:एव शास्त्रों का संरक्षण आवश्यक है। वर्तमान में धर्मग्रंथों को डिजिटल प्रारूप में भी रखा जा सकता है। धर्मग्रंथ ही जीवन नैया के खिवैया है।

संकलन :–भागचंद जैन मित्रपुरा, अध्यक्ष जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर

बनास व कोठारी नदियों में औद्योगिक इकाइयों द्वारा प्रदूषित काला पानी छोड़ा जाना जारी

जिम्मेदार विभागों की लापरवाही से काला पानी जमीनों को बंजर बना रहा है

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के दोनों किनारों की ओर से गुजरने वाली बनास एवं कोठारी नदियों में प्रोसेस हाउसों के द्वारा प्रदूषित रसायनयुक्त काला पानी छोड़ा जा रहा है जो लगातार कई वर्षों से अनवरत जारी है। जिम्मेदार विभागों की लापरवाही के चलते यह काला पानी जमीनों को बंजर बनाने में कारगर साबित हो रहा है।

शिकायतों के बावजूद प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के जिम्मेदार अधिकारियों की उदासीन कार्यशैली से उन्हें काला पानी नजर नहीं आ रहा है, जबकि गुवारड़ी और मण्डपिया नाले से भी औद्योगिक इकाइयों द्वारा चोरी छिपे छोड़ा जा रहा प्रदूषित काला पानी सीधे बनास नदी में जाकर प्रदूषित कर रहा है। यही नहीं बीते लम्बे समय से चल रही इस कारगुजारी से बनास नदी के किनारे बसे दर्जनों गांवों–खेड़ों में जहां भूजल स्तर प्रदूषित होने से खेतों की जमीनें अनुपयोगी हो रही है, वहीं लोगों के सामने पेयजल संकट बना हुआ है। उधर आसपास के ग्रामीणों ने बताया कि औद्योगिक इकाइयों द्वारा चोरी छिपे रात के अंधेरे में इकाइयों का

- **गुवारड़ी और मण्डपिया नाले से भी औद्योगिक इकाइयों द्वारा चोरी छिपे छोड़ा जा रहा प्रदूषित काला पानी सीधे बनास नदी में जा रहा है**

प्रदूषित पानी खुले में छोड़ दिया जाता है जो बहता हुआ गुवारड़ी व मण्डपिया नालों में जमा होता है तथा बाद में बनास नदी तक पहुंच जाता है। ग्रामीणों ने प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अधिकारियों पर मिलीभगत का आरोप लगाते हुये कहा कि कई बार अवगत कराने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं होने से इकाइयों से गंदे काले पानी की आवक नहीं थम रही है और नालों में रसायनयुक्त पानी की मौजूदगी फिर सामने नजर आ रही है।

गौरतलब है कि जिले में औद्योगिक विकास के साथ साथ बीते लम्बे समय से गहराती काले पानी की समस्या से कोठारी एवं बनास नदी के समीप बसे दर्जनों गांवों के

प्रोसेस हाउसों के द्वारा प्रदूषित रसायनयुक्त काला पानी छोड़े जाने से बनास एवं कोठारी नदियां प्रदूषितहो रही है।

वाशिन्दों को तमाम कोशिशों के बावजूद राहत नहीं मिल सकी, जबकि शहर में सैकड़ों औद्योगिक इकाइयां संचालित है जहां वायु और जल प्रदूषण की शिकायतें सामान्य हो चुकी है। इनमें खासकर प्रोसेस हाउसों द्वारा काला पानी छोड़े जाने की शिकायतें सर्वाधिक है। उधर राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के जिम्मेदारों द्वारा पानी के नमूने लेकर जांच के लिये भिजवाकर अपने दायित्वों की इतिश्री जरूर कर ली जाती है परन्तु अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाये जाने से जहां समस्या जस की तस बनी हुई है।

राशिफल मंगलवार 11 जून, 2024

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, आश्लेषा नक्षत्र रात्रि 11:39 तक, व्याघात योग सांय 4:47 तक, बालव करण सांय 5:28 तक, चन्द्रमा रात्रि 11:37 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृष, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–मेष, बुध–वृष, गुरू–वृष, शुक्र–वृष, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 11:39 तक है। कुमार योग और रवियोग रात्रि 11:39 से आरम्भ होगा। आज श्रुति पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:01 से 10:44 तक, लाभ–अमृत 10:44 से 2:09 तक, शुभ 3:51 से 5:34 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:16

मेष
परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन प्राप्त होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

सिंह
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।